सोमवार व्रत कथा

एक समय की बात है, किसी नगर में एक साहूकार रहता था। उसके पास बहुत धन था। लेकिन उसके निःसंतान होने के कारण साहूकार दुखी था। साहूकार प्रत्येक सोमवार को व्रत रखकर शिव-पार्वती की पूजा करता था। उसकी भक्ति से प्रसन्न होकर पार्वती ने शिव से साहूकार की इच्छा पूरी करने का अनुरोध किया। शिव ने कहा, 'हे पार्वती! साहूकार का भाग्य में यही लिखा है।'

साहूकार की भक्ति देखकर पार्वती जी ने महादेव से प्रार्थना की - साहूकार की मनोकामना पूरी करने के लिए। माता पार्वती के अनुरोध पर, शिवजी ने महाजन को एक पुत्र का आशीर्वाद दिया, लेकिन साथ ही कहा कि पुत्रसंतान का आयु केवल बारह वर्ष तक का ही होगा। साहूकार माता पार्वती और भगवान शिव की बातचीत सुन रहे थे। इस बात से वह न तो खुश थे और न ही दुखी। वह पहले की तरह भोलेनाथ की पूजा करता रहा।

कुछ समय बाद साहूकार के घर एक पुत्र का जन्म हुआ। जब बालक ग्यारह वर्ष का हुआ तो उसे शिक्षा के लिए काशी भेजा गया। साहूकार ने बच्चे के मामा को बुलाया और बहुत सारा धन दिया और कहा कि तुम मेरे पुत्र को काशी ले जाओ विद्या दिलाने के लिए और रास्ते में यज्ञ करते हुए जाना। जहां भी आप यज्ञ करें वहां जाकर ब्राह्मणों को भोजन कराएं और दक्षिणा दें। दोनों मामा-भांजे ने यज्ञ किया और ब्राह्मणों को दान देते हुए काशी की ओर चल पड़े।

रात के समय किसी नगर में एक राजा की कन्या का विवाह हो रहा था। लेकिन जिस राजकुमार से उसकी विवाह होने वाली थी वह एक आंख से काना था। राजकुमार के पिता ने अपने पुत्र के बहरे होने की बात छुपाने के लिए एक तरकीब सोची। साहूकार के पुत्र को देखकर उसके मन में एक विचार आया की इसे दूल्हा बनाकर राजकुमारी से विवाह करा दूं , उसके बाद इसे बहुत सारे धन देकर विदा करा दूंगा।

जैसा सोचा बैसा ही काम किया, साहूकार की बेटे को दूल्हे का बस्त्र पहनाकर राजकुमारी के साथ बिबाह करा दिया। लेकिन साहूकार का पुत्र को यह बात उचित नहीं लगी। उसने अवसर पर राजकुमारी के चुन्नी पर लिखा, 'तुमने मुझसे विवाह तो कर लिया है, परंतु जिस राजकुमार के साथ तुम्हें भेजा जाएगा वह एक आंख से काना है। मैं तो काशी पढ़ने जा रहा हूं। जब राजकुमारी ने चुन्नी पर लिखे शब्द पढ़े तो इसकी जानकारी अपने माता-पिता को दी।

यह बात सुनते ही राजा ने अपनी पुत्री को विदा नहीं किया, जिससे बारात वापस लौट गयी। दूसरी ओर साहूकार के पुत्र अपने मामा के संग काशी पहुंचकर यज्ञ किया। और इसी दिन ही साहूकार का पुत्र 12 वर्ष का हुआ। बालक अपने मामा से कहता है मुझे अच्छा महसूस नहीं हो रहा है। मामा ने अंदर जाकर सोने के लिए कहता है। कुछ ही देर में भगवान शिव की वरदानुसार बालक के प्राण निकल गए। मृत भांजे को देख मामा विलाप करने लगा।

संयोगवश उसी समय भगवान भोलेनाथ और माता पार्वती उधर से गुजर रहे थे। पार्वती जी ने अपने स्वामी महादेव से कहा - हे स्वामी, मुझे इसके रोने की आवाज सहन नहीं हो रही है। आप इस व्यक्ति का कष्ट दूर करें। शिवाजी मृत बालक के पास गये तो उन्होंने कहा, यह साहूकार का बेटा है, जिससे मैंने 12 वर्ष की आयु बरदान दिया था। अब इसकी आयु समाप्त हो गया।

लेकिन माता पार्वती मातृ भाव से अभिभूत हो गईं और बोलीं - हे महादेव, कृपया इस बालक को और आयु दें, अन्यथा इस बालक के वियोग में इसके माता-पिता भी तड़प-तड़प कर मर जाएंगे। माता पार्वती के अनुरोध पर भगवान भोलेनाथ ने उस बालक को जीवन दान दिया। भगवान भोलेनाथ की कृपा से बालक जीवित हो गया।

शिक्षा समाप्त के बाद मामा-भांजे अपने नगर की ओर चल दिए। चलते-चलते उसी नगर में पहुँचे, जहाँ उसका विवाह हुआ था। उस नगर में भी उन्होंने यज्ञ का आयोजन किया। बहा राजकुमारी के पिता इस बालक को पहचान लिया और राजमहल में लेकर आये। उसकी बहुत खातिरदारी कि और इस बालक के साथ अपनी पुत्री को विदा किया।

इधर अपने पुत्र के प्रतीक्षा में साहूकार और उसकी पत्नी भूखे-प्यासे दिन गिनते रहे। उन्होंने अपने पुत्र के मृत्यु समाचार मिलते ही अपने प्राण को त्याग देंगे ऐसा प्रण लिए थे। लेकिन पुत्र जीबित होने के समाचार मिलते ही बह लोग आनंदित हो गए।

उसी रात भगवान भोलेनाथ साहूकार को स्वप्ना दिया की - हे श्रेष्ठ, तुम्हारा सोमवार व्रत रखने से और व्रत कथा सुनने से प्रसन्न होकर मैंने तुम्हारे पुत्र को लंबी आयु प्रदान की है। इसी प्रकार जो सोमवार का व्रत करता है या व्रत कथा सुनता और पढ़ता है, उसके सभी कष्टों का नाश होता है और सभी मनोकामनाएं पूरी हो जाती हैं। सोमवार व्रत कथा समाप्त।